



पन्त प्रसार सन्देश

(प्रसार शिक्षा निदेशालय की त्रैमासिक समाचार पत्रिका)

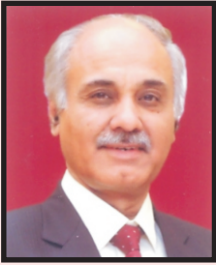
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर-263 145, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

संरक्षक: डा. जे. कुमार, कुलपति

मुख्य सम्पादक: डा. वाई. पी. एस. डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा


सम्पादक: डा. जितेन्द्र सिंह, पोस्ट डाक्टरल फेलो एवं ई. अनिल कुमार, सह निदेशक (कृषि अभियन्त्रण)

कुलपति संदेश



'पन्त प्रसार सन्देश' पत्रिका का अप्रैल-जून, 2017 (वर्ष 12:2) अंक आपके हाथों में है। वैज्ञानिकों द्वारा किए गए नवीनतम शोध निष्कर्षों को देश एवं प्रदेश में कृषि से जुड़े सभी वर्गों तक पहुँचाने में प्रसार शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रसार गतिविधियों को संकलित कर प्रबुद्ध वर्ग में प्रस्तुत करने से वैज्ञानिकों एवं प्रसार कर्मियों को प्रेरणा मिलती है। कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियों जैसे प्रशिक्षणों, अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों इत्यादि द्वारा प्रदेश के सुदूरवर्ती क्षेत्रों में कृषक, कृषक महिलाएं एवं युवक तकनीकी अर्जित कर आजीविका एवं स्वरोजगार के क्षेत्र में आशातीत वृद्धि करने में सफल होंगे ऐसा मेरा विश्वास है। इस पत्रिका द्वारा पन्तनगर विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय की गतिविधियों को जन-जन तक पहुँचा कर हमें प्रसन्नता हो रही है। मुझे आशा है कि यह पत्रिका प्रसार कार्यों को और अधिक गतिशील बनाने में सहभागी होगी।

शुभकामनाएँ।


(जे. कुमार)
कुलपति

कृषि विज्ञान केन्द्रों की गतिविधियाँ कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी (देहरादून)

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में जनपद देहरादून के विभिन्न क्षेत्रों में एवं केन्द्र पर कुल 33 प्रशिक्षणों का आयोजन किया गया, जिसमें 1418 किसानों को



कृषक वैज्ञानिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

लाभान्वित किया गया। इन प्रशिक्षणों का आयोजन विभिन्न विषयों जैसे फसल उत्पादन, सब्जी उत्पादन, पोषण प्रबन्धन, मृदा परीक्षण, एकीकृत नाशीजीव प्रबन्धन, कुक्कुट पालन, पशु पालन, बकरी पालन, जनजातीय विकास योजना के अन्तर्गत आयोजित प्रशिक्षण, गृह विज्ञान, पोषण वाटिका पर किया गया। इसके अतिरिक्त केन्द्र द्वारा कृषि एवं इससे सम्बन्धित विषयों पर विभिन्न रेखीय विभागों द्वारा आयोजित 19 किसान गोष्ठी में केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा प्रतिभाग कर 894 किसानों को तकनीकी रूप से जागरूक किया गया। केन्द्र द्वारा प्रसार कर्मियों हेतु दो प्रशिक्षण आयोजित कर 45 कर्मियों को कृषि के क्षेत्र में विकसित किसानोपयोगी तकनीकी जानकारी दी गयी।

- विगत त्रैमास में केन्द्र द्वारा कृषक प्रक्षेत्रों पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के अन्तर्गत 167 प्रदर्शनों का आयोजन 15.5 है. क्षेत्रफल में किया गया। इन प्रदर्शनों का आयोजन गेहूँ (एच.डी.-2967, यू.पी.-2628), लहसुन (एग्रीफाउण्ड पार्वती), प्याज (एग्रीफाउण्ड लाईट रेड), टमाटर (आयुष्मान, सक्षम), लौकी (सरिता, अनोखी), करेला (पाली, नौधन), चिकनी तोरी (आलोक), एकीकृत नाशीजीव प्रबन्धन (टमाटर में फल बेधक कीट, पछेती झुलसा रोग, फल सड़न रोग, प्याज में बैंगनी धब्बा रोग, लौकी, करेला एवं चिकनी तोरी में फल मक्खी कीट), पोषण प्रबन्धन (एन.पी.के. 18:18:18 एवं एन.पी.के. 0:0:50), कुक्कुट

पालन (कैरी देवेन्द्रा, चिब्रो तथा आर.आई.आर. की संकर नस्ल), बकरी पालन (जमुनापारी, बरबरी नस्ल), गृह वाटिका एवं जनजातीय विकास योजना के अन्तर्गत किया गया। इसके अतिरिक्त 25 प्रदर्शनों का आयोजन मसूर के 10 है। क्षेत्रफल में किसान प्रक्षेत्रों पर क्लस्टर फ्रन्ट लाईन डिमान्सट्रेशन के अन्तर्गत किया गया। केन्द्र द्वारा धान (अराईज-6444) एवं मक्का (पी.-3501) के 13 प्रजातिय प्रदर्शनों का आयोजन 3 है। क्षेत्रफल में किया जाना है। ऑन फार्म ट्रायल के अन्तर्गत बासमती धान की फसल में पन्त बासमती-1 के 5 प्रदर्शनों का आयोजन 01 है। क्षेत्रफल में किया जाना है।

- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा आयोजित किये गये विभिन्न प्रदर्शनों में 4 प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें 149 किसानों ने प्रतिभाग किया। प्रक्षेत्र दिवस में प्रतिभाग करने वाले किसानों को कृषक प्रक्षेत्रों पर आयोजित किये गये विभिन्न प्रदर्शनों में अपनाये गये तकनीकों एवं प्रजातियों से सम्बन्धित विषयों पर जागरूक किया गया। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा 12 टी. वी. वार्ता देहरादून दूरदर्शन को दी गयी। इसके अलावा वैज्ञानिकों द्वारा आकाशवाणी नजीबाबाद में 03 रेडियो वार्ता दी गयी। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न विषयों पर 56 डायग्नोस्टिक भ्रमण कर 405 किसानों की कृषि सम्बन्धी समस्याओं का निराकरण किया गया। वैज्ञानिकों द्वारा 130 प्रक्षेत्र भ्रमण कर 1591 किसानों को कृषि विकास में किये जा रहे नवीनतम, व्यावहारिक एवं किसानोपयोगी तकनीकों पर जानकारी दी गयी। इसके अतिरिक्त महिला मण्डल की 03 बैठक आयोजित कर 37 महिलाओं को पोषण वाटिका विषय पर तकनीकी जानकारी दी गयी। कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी में 46 बार किसानों का केन्द्र पर भ्रमण हुआ, जिसमें 126 किसानों को उनकी कृषि सम्बन्धी समस्या का निराकरण किया गया। किसानों को गन्ने की ट्रेंच विधि से बुवाई तथा गन्ने के साथ राजमा एवं फ्रेन्च बीन की अन्तःफसली खेती तथा समेकित फसल प्रबन्धन विषय पर किसानों को तकनीकी जानकारी दी गयी। इसके अतिरिक्त किसानों को गन्ना की अधिक उत्पादन देने वाली तथा शीघ्र पकने वाली प्रजातियां जैसे को.-0238, को.शा.-88230 व को.पन्त-3220 की खेती के लिये प्रोत्साहित किया जा रहा है।

- सहकारिता विभाग, उत्तराखण्ड सरकार द्वारा देहरादून में मई 13-19, 2017 तक आयोजित राज्य स्तरीय सहकारिता प्रदर्शनी एवं मेले में पन्तनगर कृषि विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करते हुये केन्द्र द्वारा प्रदर्शनी में प्रतिभाग किया गया।



स्टाल का भ्रमण करते हुए मा. कृषि मंत्री उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड सरकार द्वारा केन्द्र के स्टाल का भ्रमण किया गया तथा प्रदर्शित किये गये तकनीकों से माननीय मंत्री जी को अवगत कराया गया। इसके अतिरिक्त भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के उप-महानिदेशक (कृषि प्रसार) तथा भारतीय मृदा एवं जल संरक्षण संस्थान, देहरादून के निदेशक द्वारा भी केन्द्र के स्टाल का भ्रमण कर प्रदर्शित किये गये तकनीकों एवं साहित्य पर जानकारी प्राप्त की गयी।

- पन्तनगर कृषि विश्वविद्यालय के निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास एवं डा. बी.एस. कार्की, प्राध्यापक, प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा मई 23, 2017 को केन्द्र का भ्रमण किया गया तथा केन्द्र के वैज्ञानिकों के साथ

बैठक कर उनके द्वारा संचालित विभिन्न प्रसार कार्यक्रमों की समीक्षा की गयी।

- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद - अटारी,



केन्द्र के प्रक्षेत्र का अवलोकन करते हुए निदेशक प्रसार शिक्षा

कानपुर द्वारा जून 08-10, 2017 को उत्तराखण्ड एवं उत्तर प्रदेश के कृषि विज्ञान केन्द्रों की वार्षिक क्षेत्रीय कार्यशाला का आयोजन कानपुर में किया गया। इस कार्यशाला में केन्द्र के वैज्ञानिक द्वारा प्रतिभाग कर वर्ष 2016-17 में केन्द्र द्वारा संचालित किये गये प्रसार कार्यक्रमों तथा वर्ष 2017-18 की कार्ययोजना का प्रस्तुतिकरण किया गया। इस कार्यशाला में कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी, देहरादून को पर्वतीय जोन में सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुतिकरण सम्मान से सम्मानित किया गया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, धनौरी (हरिद्वार)

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में कुल 08 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, जिसमें जनपद के 176 किसानों को कृषि एवं सम्बन्धित विषयों पर तकनीकी रूप से सुदृढ़ किया गया।
- विगत त्रैमास में केन्द्र द्वारा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों में 205 तथा प्रक्षेत्र परीक्षणों में 40 प्रक्षेत्रों पर कृषि, पादप सुरक्षा, गृह विज्ञान एवं मृदा विज्ञान विषयक परीक्षणों का आयोजन किया गया।
- मई 22, 2017 को निदेशक प्रसार शिक्षा डा. वाई.पी.एस. डबास ने केन्द्र का भ्रमण किया एवं डा. बी.एस. कार्की, प्राध्यापक सस्य द्वारा इसके साथ-साथ केन्द्र के स्टाफ के साथ बैठक कर विभिन्न कार्यों की समीक्षा की गई और केन्द्र को बेहतर कार्य करने हेतु निर्देश देते हुए कृषि विज्ञान केन्द्र, हरिद्वार की सराहना की।

- जून 05, 2017 को केन्द्र के प्रक्षेत्र में एक छायादार वृक्ष के पौधे को रोपित किया गया। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर



विश्व पर्यावरण दिवस पर पौधारोपण

- केन्द्र के स्टाफ द्वारा पर्यावरण की रक्षा विषय पर विचार-विमर्श और परिचर्चा की गई।
- केन्द्र को जून 08-10, 2017 को कानपुर में आयोजित 24वीं जोनल कार्यशाला में श्रेष्ठ प्रस्तुतिकरण के लिए पुरस्कृत किया गया।
- जून 15, 2017 को केन्द्र द्वारा राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान के अन्तर्गत गोद लिये गये ग्राम-दौलतपुर में केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा जागरूकता प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया तथा ग्रामवासियों को स्वच्छता के लाभ एवं महत्व के विषय में जानकारी दी गयी।

- जून 15, 2017 को केन्द्र द्वारा एक कृषक वैज्ञानिक संवाद का आयोजन विकास भवन हरिद्वार में किया गया। इसमें



राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान का आयोजन

लगभग 50 कृषकों ने भाग लिया। इसमें कृषि एवं सम्बन्धित विषयों पर समसामयिक चर्चा की गई। इसमें केन्द्र के वैज्ञानिकों एवं प्रभारी अधिकारी डा. पुरुषोत्तम कुमार ने कृषकों की कृषि सम्बन्धी जिज्ञासाओं का समाधान किया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, मटेला (अल्मोड़ा)

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में 36 प्रशिक्षण कार्यक्रमों (कृषक प्रशिक्षण, ग्रामीण युवाओं एवं प्रसार कार्यकर्ताओं) का आयोजन किया गया, जिसमें 622 प्रशिक्षणार्थियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विगत त्रैमास में 62 कृषकों के प्रक्षेत्र पर भ्रमण किया गया, जिसमें 1019 कृषकों को आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराई गई एवं समस्याओं का निराकरण भी किया गया।

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में 19.0 है. क्षेत्रफल पर 345 कृषकों के खेत पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों एवं अनुकरणीय प्रदर्शन का आयोजन



अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के दौरान उपस्थित कृषक

किया जा रहा है। केन्द्र के वैज्ञानिक समय-समय पर अग्रिम पंक्ति प्रदर्शनों का भ्रमण कर कृषकों को आवश्यक कार्य करने हेतु जानकारी प्रदान करते हैं एवं कृषक की समस्याओं का समाधान भी मौके पर कर रहे हैं।

- विगत त्रैमास में केन्द्र द्वारा विभिन्न स्थानीय एवं राज्य स्तरीय समाचार पत्रों में कृषि कार्यों से सम्बन्धित 07 न्यूज प्रकाशित की गई तथा विभिन्न फसलों पर 04 प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें 125 कृषकों एवं रेखीय विभागों के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा प्रतिभाग किया गया एवं कृषकों को नई तकनीक के बारे में विस्तार से बताया गया।
- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विगत त्रैमास में मई 13, 2017 को मुंडुवा एवं झिंगोरा की उन्नत प्रजातियाँ एवं वैज्ञानिक खेती विषय पर आकाशवाणी केन्द्र, अल्मोड़ा में डा. कंचन नैनवाल द्वारा रेडियो वार्ता दी गयी। मई 18, 2017 को उर्द की खेती विषय पर पन्तनगर जनवाणी केन्द्र में डा. कंचन नैनवाल द्वारा रेडियो वार्ता दी गयी। मई 29, 2017 को प्लास्टिक पलवार में शिमला मिर्च एवं टमाटर का अधिक उत्पादन विषय पर डा. दीपाली टी. पाण्डे द्वारा रेडियो वार्ता आकाशवाणी केन्द्र, अल्मोड़ा में दी गयी एवं जून 06, 2017 को पर्वतीय

क्षेत्रों हेतु सोयाबीन की उन्नत प्रजातियाँ एवं वैज्ञानिक खेती विषय पर डा. शिव दयाल द्वारा आकाशवाणी केन्द्र, अल्मोड़ा में रेडियो वार्ता दी गयी। साथ ही 11 किसान गोष्ठियों का आयोजन रेखीय विभागों द्वारा किया गया, जिसमें केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा व्याख्यान दिये गये। इस अवसर पर 919 कृषकों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

- मई 14, 2017 को पन्तनगर विश्वविद्यालय के कुलपति डा. जे. कुमार, निदेशक प्रसार शिक्षा डा. वाई.पी.एस. डबास, डा. बी.एस. कार्की एवं डा. मोहन सिंह

द्वारा केन्द्र का भ्रमण किया गया। भ्रमण उपरान्त कुलपति महोदय ने आवश्यक दिशा निर्देश देते हुए उत्कृष्ट कृषि



प्रक्षेत्र भ्रमण के दौरान विश्वविद्यालय के कुलपति डा. जे. कुमार

कार्यों की सम्भावनाओं को देखते हुए केन्द्र के वैज्ञानिकों को इस क्षेत्र में अहम भूमिका निभाने को कहा गया। साथ ही मई 24, 2017 को डा. के.एस. शेखर एवं डा. डी.सी. डिमरी, संयुक्त निदेशक, प्रसार शिक्षा निदेशालय, पन्तनगर ने केन्द्र द्वारा किये जा रहे कार्यों की समीक्षा एवं प्रक्षेत्र का भ्रमण किया एवं आवश्यक दिशा निर्देश दिये गये।

कृषि विज्ञान केन्द्र, गैना एंचोली (पिथौरागढ़)

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में केन्द्र पर 21 तथा केन्द्र से बाहर 20 प्रशिक्षण सम्पन्न किए गये, जिसमें क्रमशः 425 (258 पुरुष एवं 167 महिला) एवं 413 (211 पुरुष एवं 202 महिला) कृषक लाभान्वित हुए तथा ग्रामीण युवाओं को केन्द्र पर 03 प्रशिक्षण दिये गये, जिसमें क्रमशः 30 (25 पुरुष एवं 05 महिला) कृषक लाभान्वित हुए। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा वाह्य प्रसार कार्यकर्ताओं हेतु 03 प्रशिक्षण आयोजित किये गये, जिसके द्वारा 39 (21 पुरुष एवं 18 महिला) प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए।

- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा विगत त्रैमास में कृषकों के प्रक्षेत्र पर 91 भ्रमण किए गये, जिसके द्वारा 588 कृषक लाभान्वित हुए। केन्द्र पर जानकारीयें प्राप्त करने हेतु 253

किसानों द्वारा भ्रमण किये गये और केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा अपनी समस्याओं का समाधान एवं कृषि उत्पादन की नवीनतम



कृषक प्रक्षेत्र पर पौध रोपण की जानकारी देते हुए वैज्ञानिक

प्राप्त की गई। केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा प्रचार-प्रसार हेतु दैनिक समाचार पत्र अमर उजाला व दैनिक जागरण में 02 तकनीकी समाचारों को प्रकाशित किया गया। केन्द्र के वैज्ञानिकों के द्वारा 20 गोष्ठियों का आयोजन किया गया, जिससे कुल 728 किसान लाभान्वित हुए।

- केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन में धान-2.0 है, धान बासमती, 1.0 है, धान हाइब्रिड 0.4 है, मक्का 0.4 है, मंडुआ 1.0 है, सोयाबीन-3.0 है, अरहर 1.0 है, गहत 0.5 है, शिमला मिर्च 0.5 है, टमाटर 0.5 है, पत्तागोभी 0.5 है, फ्रासबीन 0.5 है। तथा अन्य सब्जियों को लगाया गया।
- अप्रैल 18, 2017 को केन्द्र द्वारा अंगीकृत ग्राम-किमतोली में पंत मसूर-8 फसल पर प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। इस प्रक्षेत्र दिवस में कुल 23 कृषकों ने प्रतिभाग किया।
- अटारी जोन-4 एवं भारतीय दलहन अनुसंधान संस्थान, कानपुर द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित जोनल कार्यशाला, जून 08-10, 2017 तक केन्द्र के प्रभारी अधिकारी द्वारा प्रतिभाग किया गया। इसमें उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखण्ड के समस्त कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा प्रतिभाग किया गया।
- केन्द्र पर तीन पॉलीटनल स्थापित कर उसमें तीन हजार कीवी के नए पौधे रोपित कर दिये गये हैं, जिन्हें ग्राफिटिंग हेतु प्रयोग किया जायेगा। केन्द्र द्वारा चलायी जा रही दो परियोजनाओं के अन्तर्गत कृषकों को उन्नत प्रजाति की पौधे जैसे सब्जियों में शिमला मिर्च-17200, टमाटर-4000, पत्तागोभी-4000, कद्दू-1000, लौकी-400 व बैंगन-3000 के पौधे वितरित किए गए।

कृषि विज्ञान केन्द्र, काशीपुर (ऊधमसिंहनगर)

- केन्द्र द्वारा विगत त्रैमास में केन्द्र पर एवं केन्द्र के बाहर कुल 08 प्र. शिक्षण आयोजित किये गये, जिसमें 168 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रतिभाग किया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम खाद्य पदार्थ का सुरक्षित भण्डारण, मोमबत्ती बनाना, फिश फीड फारमूलेशन, पोषण वाटिका का प्रबन्धन, खाद्य पदार्थ का मूल्यवर्धन, धान के बीज उपचार, जेन्डर सेन्सीटाइजेशन आदि विषयो पर आयोजित किये गये।
- विगत त्रैमास में अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, कल्सटर प्रदर्शनों के अन्तर्गत कुल 27.70 है. क्षेत्रफल एवं 141 कृषकों के यहाँ पूर्व रबी 2016-17 एवं खरीफ 2017 के प्रदर्शन आयोजित किये गये एवं 02 विषयो पर ऑन फार्म ट्रायल 15 कृषको के यहाँ आयोजित किये गये।
- अन्य प्रसार गतिविधियों के अन्तर्गत 1 प्रक्षेत्र दिवस, 6 टी.वी. वार्ता, डी.डी. किसान (चौपाल चर्चा), ई.टी.वी. आदि के द्वारा प्रसारित की गई। 02 प्रचलित लेख, 07 किसान गोष्ठी, जिसमें 738 कृषकों ने प्रतिभाग किया एवं 52 बार वैज्ञानिकों द्वारा 288 कृषको के यहाँ प्रक्षेत्र भ्रमण किया गया।
- केन्द्र के क्रॉप कैप्टेरिया में मूँगफली टी.जी. 37-ए एवं मल्लिका का प्रदर्शन आयोजित किया गया तथा मत्स्य इकाई से 178 कि.ग्रा. मछली का उत्पादन कर केन्द्र द्वारा विक्रय किया गया।
- केन्द्र के प्रभारी अधिकारी डा. सी. तिवारी द्वारा जोनल वर्कशाप हेतु जून 08-10, 2017 तक अटारी, कानपुर में प्रतिभाग किया गया।



प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

सीड हब योजना के क्रियान्वयन हेतु वैज्ञानिकों का भ्रमण

कृषि विज्ञान केन्द्र, ढकरानी (देहरादून) पर दलहनी फसलों का सीड हब स्थापित करने के सम्बन्ध में कुलपति जी की अध्यक्षता में मई 05, 2017 को समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। जिसके अनुपालन में प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा गठित टीम के सदस्यों डा. रमेश चन्द्रा, समन्वयक, अखिल भारतीय समन्वित दलहन शोध परियोजना; डा. पी.एस. शुक्ला, संयुक्त निदेशक, प्रजनक बीज उत्पादन केन्द्र एवं डा. बी.एस. कार्की, प्राध्यापक, सस्य विज्ञान, प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा जून 27-29, 2017 तक जनपद-देहरादून का भ्रमण किया गया। कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों के साथ जनपद के कृषकों के प्रक्षेत्रों पर जाकर संचालित सीड हब कार्यक्रम के अन्तर्गत दलहनी फसलों के बीजोत्पादन की सम्भावनाओं का आंकलन किया गया।

समेटी-उत्तराखण्ड द्वारा आयोजित प्रशिक्षण

राज्य कृषि प्रबन्धन एवं प्रसार प्रशिक्षण संस्थान, उत्तराखण्ड (समेटी-उत्तराखण्ड) द्वारा विगत त्रैमास में राज्य के प्रगतिशील कृषक, कृषक सलाहकार समिति (एफ.ए.सी.), विकास खण्ड स्तरीय तकनीकी दल (बी.टी.टी.), ब्लाक तकनीकी प्रबन्धक (बी.टी.एम.), रेशम पालक, निरीक्षक/कर्मचारी एवं कृषि विभाग के प्रसार कर्मियों हेतु 'खरीफ फसलों में समन्वित रोग एवं कीट प्रबन्धन', 'रेशम पालन: आय एवं स्वरोजगार का साधन' एवं 'जलवायु परिवर्तन और कृषि' विषयक 03 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के द्वारा कुल 34 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए।

प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा आयोजित प्रशिक्षण/भ्रमण

प्रसार शिक्षा निदेशालय के प्रशिक्षण एवं भ्रमण इकाई द्वारा विगत त्रैमास में विभिन्न सरकारी विभागों, स्वयं-सेवी संस्थाओं, निजी एवं सार्वजनिक फर्मों तथा परियोजनाओं द्वारा प्रायोजित कुल 09 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। आयोजित किये गये यह प्रशिक्षण पशुपालन, एगो फॉरेस्ट्री, सब्जी उत्पादन एवं मशरूम उत्पादन से सम्बन्धित थे। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों से 322 प्रशिक्षणार्थी लाभान्वित हुए। अधिकांश प्रशिक्षण तीन दिवसीय से लेकर पांच दिवसीय थे। प्रशिक्षण एवं भ्रमण कार्यक्रम का संचालन प्राध्यापक एवं प्रभारी प्रशिक्षण डा. एस.के. बंसल द्वारा किया गया।

एकल खिड़की पद्धति से कृषक सेवा

प्रसार शिक्षा निदेशालय के अन्तर्गत कार्यरत कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केन्द्र (एटिक) द्वारा विगत त्रैमास में पन्तनगर कृषक हेल्पलाइन (05944-234810, 05944-235580) एवं किसान कॉल सेन्टर (1800-180-1551 टोल फ्री) के माध्यम से कुल 482 प्रश्न किसानों द्वारा पूछे गये, जिनका समाधान सम्बन्धित विषय के वैज्ञानिकों द्वारा किया गया। देश एवं प्रदेश के विभिन्न स्थानों से आये 672 कृषकों ने एटिक पर भ्रमण किया एवं किसानों द्वारा एटिक से कुल रु. 51,415 के साहित्य एवं रु. 1,92,445 के धान्य फसलों, दलहनी, तिलहनी, मोटा अनाज एवं सब्जियों के बीजों का क्रय किया गया। इसमें रु. 1.21 लाख धनराशि के खरीफ बीजों की उपलब्धता विश्वविद्यालय सचल बीज वाहन के माध्यम से जनपद ऊधमसिंहनगर, नैनीताल एवं हरिद्वार के विभिन्न गांवों के किसानों के द्वार तक सुनिश्चित की गयी, जिसमें निदेशालय के वैज्ञानिक डा. राम जी मौर्य, प्रभारी एटिक एवं प्राध्यापक सस्य विज्ञान; डा. बी.एस. कार्की, प्राध्यापक सस्य विज्ञान; ई. अनिल कुमार, सह निदेशक (मृदा एवं जल संरक्षण अभि.) एवं डा. मोहन सिंह, विषय वस्तु विशेषज्ञ, सस्य विज्ञान का विशेष योगदान रहा।

आगामी त्रैमास में कृषकों हेतु महत्वपूर्ण बिन्दु

मैदानी क्षेत्रों में कृषि हेतु- माह जुलाई

- धान में खरपतवार नियंत्रण के लिए ब्यूटाक्लोर 50 ई.सी. 3.0 लीटर या एनीलोफास 30 ई.सी. 1.65 लीटर मात्रा प्रति है. की दर से रोपाई के 3-4 दिन के अन्दर प्रयोग करें। अधिक उपजवाली किस्मों में नाइट्रोजन 180, फास्फोरस 60, पोटाश 40 कि.ग्रा. प्रति है. तथा सुगन्धित धान (बौनी) किस्मों में नाइट्रोजन 80-120, फास्फोरस 60 तथा पोटाश 40 कि.ग्रा. प्रति है. की दर से प्रयोग करें। नाइट्रोजन की आधी मात्रा एवं फास्फोरस तथा पोटाश की पूरी मात्रा रोपाई के पूर्व खेत में मिला दें।
- मूंगफली की बुवाई जुलाई मध्य तक कर लें। गुच्छेदार प्रजातियों के लिए प्रति है. 80-100 कि.ग्रा. तथा फैलने वाली प्रजातियों के लिए 60-80 कि.ग्रा. बीज का प्रयोग करें। फैलने वाली प्रजातियों में 45 सेमी. तथा गुच्छेदार प्रजातियों में 30 सेमी. पंक्ति से पंक्ति की दूरी तथा 15-20 सेमी. पौधे से पौधे की दूरी रखें।
- गन्ना में जलभराव वाले खेतों से जल निकास की व्यवस्था करें। जुलाई के प्रथम सप्ताह में जड़ों पर हल्की एवं अन्तिम सप्ताह में पर्याप्त मिट्टी चढ़ाये। फसल की बढ़वार अच्छी होने पर 5 फीट की ऊंचाई पर बंधाई करें। अगोला बेधक कीट की रोकथाम के लिए कार्बोफ्यूथ्रान 3 जी. का 33 कि.ग्रा. प्रति है. को नमी की दशा में प्रयोग करें। पाइरिल्ला या सफेद मक्खी का प्रकोप होने पर 1.25 लीटर क्लोरपाइरीफास 20 ई.सी. की दवा को 600-800 लीटर पानी में मिलाकर प्रति है. छिड़काव करें।
- बैंगन की अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए जुलाई के प्रथम एवं द्वितीय सप्ताह में 60X60 सेमी. की दूरी पर सांयकाल के समय रोपाई करें।
- फूलगोभी की अगेती फसल हेतु ऊँचे खेत में 50X30 सेमी. की दूरी पर रोपाई करें।
- आम के नये बाग लगाने हेतु रोपाई का कार्य प्रारम्भ करें। नर्सरी में वीनियर कलम बांधने का कार्य प्रारम्भ करें।
- नीबूवर्गीय फल वृक्षों में कैंकर की रोकथाम के लिए ब्लाइटाक्स-50 का छिड़काव करें। बाग में जल निकास की उचित व्यवस्था करें।
- अमरुद के फलदार बाग में नाइट्रोजन उर्वरकों का प्रयोग करें।
- पपीता में जल निकास का प्रबन्ध करें। तना विगलन की रोकथाम हेतु ब्लाइटाक्स-50 घोल से छिड़काव करें।
- लीची के नये बाग लगाने हेतु रोपाई का कार्य करें। नये पौधे तैयार करने के लिए गूटी बांधने का कार्य इस माह समाप्त कर लें।
- आंवला के बाग की रोपाई का कार्य प्रारम्भ करें। प्ररोह गांठ व रस्ट रोग की रोकथाम हेतु नुवाक्रान व इण्डोफिल एम-45 का छिड़काव करें।
- नाशपाती में बीजू पौधों पर कलम बांधे। कज्जली रोग की रोकथाम हेतु पेड़ों पर जीनेब का छिड़काव करें।
- आड़ू एवं आलुबुखारा में भूरा विगलन रोग की रोकथाम हेतु बेनलेट का छिड़काव करें।

माह अगस्त:

- धान की फसल में नाइट्रोजन की पहली 1/4 भाग मात्रा कल्ले फूटते समय एवं दूसरी 1/4 भाग मात्रा बालियों में गोभ के निकलने से पहले

यूरिया के रूप में ट्रापज़ेसिंग के रूप में डालें। खैरा रोग के नियंत्रण के लिए 5 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट तथा 20 कि.ग्रा. यूरिया को 1000 लीटर पानी में घोलकर प्रति है. की दर से छिड़काव करें। जीवाणु झुलसा के लक्षण दिखाई देते ही 15 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लिन व 500 ग्राम कॉपर-आक्सीक्लोराइड को आवश्यक पानी की मात्रा में घोलकर प्रति है. छिड़काव करें। प्रारम्भिक अवस्था में यदि खेत में औसतन 8-10 प्रतिशत मृत गोभ तना छेदक के तथा 10-15 भूरा फुदका की संख्या प्रति पौधा दिखाई दे तो कीटनाशी का प्रयोग करें।

- उर्द एवं मूंग की शीघ्र पकने वाली किस्मों की बुवाई करें। इसके लिए मूंग की पंत मूंग-2, पी.डी.एम.-54, नरेन्द्र मूंग-1, पंत मूंग-4 व 5 एवं उड़द के लिए पंत उर्द-19, 35 व 40 व नरेन्द्र उर्द-1 बो सकते हैं।
- अरहर में पत्ती लपेटक कीट का प्रकोप होने पर क्वीनालफास 25 ई.सी. की 1 लीटर मात्रा को 600-800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- मूंगफली में खरपतवार नियंत्रण के लिए एक निराई करें। यदि खेत में दीमक का प्रकोप हो तो 4 लीटर प्रति है. की दर से क्लोरपाइरीफास का प्रयोग करें। टिक्का रोग नियंत्रण के लिए खड़ी फसल पर 2.5 ग्राम मैकोजेब 75 डब्ल्यू.पी. लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- टमाटर, बैंगन व मिर्च में आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई, सिंचाई व जल निकास की व्यवस्था करें। टमाटर में झुलसा नामक बीमारी के नियंत्रण हेतु 0.2 प्रतिशत इण्डोफिल एम-45 का छिड़काव करें। बैंगन में फल तथा तना छेदक नामक कीट के बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत सेविन नामक दवा का घोल बनाकर छिड़काव करें। मिर्च में कीटों तथा बीमारियों से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत इण्डोफिल एम-45 व 0.15 प्रतिशत मैटासिस्टाक का घोल बनाकर एक छिड़काव अवश्य करें।
- फूलगोभी की मध्यकालीन फसल की 45X45 सेमी. की दूरी पर रोपाई करें।
- आम के पौधशाला में मूलवृत्त तैयार करने के लिए गुठलियों की बुवाई करें। नये पौधे तैयार करने के लिए 1 वर्ष पुराना मूलवृत्त पर वीनियर कलम बांधने का कार्य करें। शाखा गांठ कीट की रोकथाम के लिए रोगोर (0.2 प्रतिशत) घोल के दो छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर करें।

माह सितम्बर:

- अरहर में पत्ती लपेटक एवं फलीबेधक कीट के रोकथाम हेतु मोनोक्रोटोफास 36 ई.सी. की 100 मि.ली. दवा एक लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- मूंगफली में फूल बनने एवं खूंटियों के भूमि में प्रवेश तथा फलियों के विकास के समय भूमि में पर्याप्त नमी आवश्यक है। नमी के अभाव में सिंचाई का प्रबन्ध करें।
- वर्षा न होने पर गन्ना की फसल में सिंचाई करें। गन्ना की दूसरी बंधाई आवश्यकतानुसार करें। कण्डुवा व लालसड़न ग्रसित पौधे दिखाई देने पर सावधानीपूर्वक उखाड़कर नष्ट कर दें। गुरदासपुर बेधक की रोकथाम के लिए गन्ने के ऊपर का सूखा भाग काटकर नष्ट कर दें।
- तोरिया की बुवाई माह के प्रथम पखवाड़े में करें। बुवाई हेतु पी.टी.-30, 303, 507, संगम, भवानी, उत्तरा आदि किस्में उपयुक्त हैं। बीज दर 3-4 कि.ग्रा. प्रति है. 30 सेमी. की लाईन में 3-4 सेमी. गहरी बुवाई करें। बीज को 2.5 ग्राम थाइराम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से शोधित करें। उर्वरकों में फास्फोरस के लिए सिंगल सुपर फास्फेट का प्रयोग

लाभदायक होता है क्योंकि इसमें 12 प्रतिशत सल्फर की उपलब्धि हो जाती है।

- अच्छी पैदावार व आमदनी प्राप्त करने के लिए इस माह 50X50 सेमी. की दूरी पर टमाटर की रोपाई करें।
- अगेती आलू की बुवाई माह के अन्तिम सप्ताह में की जा सकती है। इसके लिए कुफरी चन्द्रमुखी व कुफरी अशोका उन्नत किस्में हैं।
- नींबू वर्गीय फलों को गिरने से रोकने के लिए 2, 4-डी या नैथलीन एसिटिक एसिड का छिड़काव करें।
- बेर में चूर्णित आसिता की रोकथाम हेतु कैराथेन का छिड़काव करें।

पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि हेतु-

माह जुलाई:

- टमाटर/मिर्च, अदरक, हल्दी में बीमारी से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत इण्डोफिल एम-45 नामक दवा का घोल बनाकर एक छिड़काव करें।
- सेब/नाशपाती के बाग में भूमि संरक्षी फसलों की बुवाई करें। कज्जली धब्बा रोग की रोकथाम हेतु जीनेब व ब्लाइटाक्स-50 का छिड़काव करें।
- आड़ू, आलूबुखारा व खुबानी में भूरा विगलन की रोकथाम हेतु बेनलेट का छिड़काव करें।

माह अगस्त:

- सिंचित धान में बाली निकलने से पूर्व पर्याप्त नमी की दशा में 2.0 कि. ग्रा. यूरिया प्रति नाली प्रयोग करें। तना छेदक कीट के नियंत्रण के लिए क्लोरपाइरीफास 20 ई.सी. या क्यूनालफास 25 ई.सी. की क्रमशः 30 मि. ली. व 40 मि.ली. प्रति नाली की दर से 16-20 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- सोयाबीन में खरपतवार नियंत्रण हेतु निराई करें। कमला कीट, क्यूलिआप्स एवं गर्डिल विटिल कीट नियंत्रण के लिए डायमथोएट 30 ई.सी. 20 मि.ली. दवा प्रति नाली को 16-20 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- आलू, टमाटर, मिर्च, शिमला मिर्च, अदरक, हल्दी में झुलसा नामक बीमारी से बचाव के लिए 0.2 प्रतिशत इण्डोफिल एम-45 नामक दवा का घोल बनाकर छिड़काव करें।
- भिण्डी, लोबिया में आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई व सिंचाई करें। नई फसल में 50 कि.ग्रा. यूरिया प्रति है. की दर से खड़ी फसल में डालें।
- खीरा वर्गीय फसलों में 10-15 ग्राम यूरिया प्रति थाले की दर से डालें।
- नींबू वर्गीय फल, सेब, नाशपाती, आलूबुखारा एवं खुबानी में फल विगलन की रोकथाम के लिए ब्लाइटाक्स 50 (0.25 प्रतिशत) के घोल का छिड़काव करें।

माह सितम्बर:

- असिंचित क्षेत्रों में धान एवं मंडुवा में झोंका रोग नियंत्रण के लिए लक्षण दिखाई देने पर कार्बेन्डाजिम या एडिफन्फास की 14-20 ग्राम मात्रा को 15-20 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। 10 दिन के अन्तराल पर पुनः छिड़काव करें। धान में खैरा रोग नियंत्रण हेतु 100

ग्राम जिंक सल्फेट को 400 ग्राम यूरिया अथवा 50 ग्राम बुझे हुए चूने के 20 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति नाली छिड़काव करें। पत्ती लपेटक कीट के लिए डाईमिथोएट 30 ई.सी. को 3 मि.ली. प्रति नाली की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

- टमाटर, मिर्च, शिमला मिर्च में झुलसा बीमारी/फलों पर धब्बे दिखाई देने पर इण्डोफिल 45 नामक दवा का 0.2 प्रतिशत घोल बनाकर छिड़काव करें।
- बैंगन के फल छेदक तथा तना छेदक कीट एवं खीरा वर्गीय फसलों में कीट से बचाव हेतु 0.2 प्रतिशत सेविन नामक दवा का घोल बनाकर छिड़काव करें।
- सेब की नर्सरी के बीजू पौधों पर टी-चश्मा चढ़ाएं। सेब/नाशपाती में रूइया कीट की रोकथाम हेतु मेटासिस्टाक्स का छिड़काव करें। दग्ध अंगमारी की रोकथाम हेतु बोर्डो मिश्रण (4:4:50) का छिड़काव करें।
- आड़ू एवं आलूबुखारा पेड़ों के तनों को चूने से पोत दें। पेड़ों पर बोरेक्स का छिड़काव करें।

पशुपालन/मत्स्य पालन एवं अन्य-

माह जुलाई:

- वाह्य परजीवी नाशक का बाड़े में छिड़काव करें। पतले गोबर की बीमारी से बचाव हेतु सूखे चारे की पर्याप्त मात्रा 30 प्रतिशत से बढ़ाकर 40 प्रतिशत कर दें।
- कुक्कुटों के बिछावन को सूखा रखने के लिए इसकी नियमित गुड़ाई करें। इसके लिए बुझा हुआ चूना 1.25 कि.ग्रा. प्रति वर्ग मी. की दर से मिलायें। चूजों में काक्सीडियोसिस रोग की रोकथाम के लिए उचित उपाय करें।
- तालाब के पानी में प्राकृतिक भोजन (प्लवकों) का निरीक्षण करें। मत्स्य बीज संचय के पूर्व पानी की जाँच करें एवं पी.एच. 7.5 से 8.0 व घुलित आक्सीजन 3-7 मि.ग्रा. प्रति लीटर रखें। 10-20 कु. प्रति है. प्रति माह कच्चे गोबर का प्रयोग करें।

माह अगस्त:

- पशुओं को कृमिनाशक दवा पिलायें।
- तालाब में 25-50 मि.मी. आकार के 10000/है. मत्स्य बीज का संचय करें। गोबर की खाद के प्रयोग से 15 दिनों के बाद एन.पी.के. खादों (यूरिया, सिंगल सुपर फास्फेट व पोटाश) का प्रयोग करें। एन.पी.के. खादों के प्रयोग के 15 दिनों के पश्चात् 10-20 कु./है. गोबर की खाद का प्रयोग करें।

माह सितम्बर:

- यदि पशु मिट्टी खा रहा है तो उसे संतुलित आहार के साथ-साथ 40 से 50 ग्राम खनिज मिश्रण दें, साथ ही चिकित्सक के परामर्श के अनुसार अन्तः कृमिनाशक दवा पिलायें। यकृत कृमि, निमोनिया एवं दस्त से बचाव हेतु चिकित्सक की सलाह लें।
- तालाब के पानी में प्लवकों का निरीक्षण करें व संतोषप्रद मात्रा को कायम रखें। मछलियों के भार का 2-3 प्रतिशत की दर से परिपूरक आहार दें।

102वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का आयोजन

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा 102वाँ अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का आयोजन पन्तनगर में अक्टूबर 06-09, 2017 तक किया जा रहा है, जिसमें कृषि निवेश से सम्बन्धित राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय फर्मे, स्वयंसेवी संस्थाएं, सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र की फर्मे एवं कृषि से सम्बन्धित शैक्षणिक / शोध संस्थान आदि अपने स्टॉल सहित सादर आमंत्रित हैं। किसान मेले में आयोजित किये जाने वाले प्रमुख कार्यक्रमों के विवरण निम्नवत हैं :-



किसान मेले का दृश्य

प्रमुख आकर्षण

- ★ अनुसंधान केन्द्रों पर प्रदर्शनों का अवलोकन
- ★ कृषि सूचना केन्द्र का अवलोकन
- ★ आधुनिक कृषि यंत्रों का प्रदर्शन
- ★ उन्नतशील बीज एवं पौधों की बिक्री
- ★ कृषि उद्योग प्रदर्शनी
- ★ विश्वविद्यालय प्रकाशनों की रियायती दर पर बिक्री

विशेष कार्यक्रम एवं प्रतियोगितायें

- | | |
|---|---------------|
| ★ फल-फूल, शाक-भाँजी एवं परिरक्षित पदार्थों की प्रदर्शनी व प्रतियोगिता | 06-07 अक्टूबर |
| ★ संकर बछियों की नीलामी (अपरान्ह 2.00 बजे) शैक्षणिक डेरी फार्म, नगला | 07 अक्टूबर |
| ★ पशु प्रदर्शनी एवं प्रतियोगिता (पूर्वाह्न 10.00 बजे) पशु उत्पाद एवं प्रबन्धन विभाग | 08 अक्टूबर |
| ★ विशेष व्याख्यानमाला (अपरान्ह 2.30 से 3.30 बजे) किसान मेला स्थल | 06-08 अक्टूबर |
| ★ किसान गोष्ठी (अपरान्ह 3.30 से 6.30 बजे) किसान मेला स्थल | 06-08 अक्टूबर |
| ★ सांस्कृतिक कार्यक्रम (सांय 7 से 8.30 बजे) किसान मेला स्थल | 06-08 अक्टूबर |
| ★ समापन एवं पुरस्कार वितरण (अपरान्ह 3.00 बजे) किसान मेला स्थल | 09 अक्टूबर |

मेले में स्टॉल लगाने एवं अन्य सम्बन्धित विशेष जानकारी निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास तथा मेला समन्वयक, डा. एस.के. बंसल के दूरभाष संख्या 05944-234812 (कार्या.), 233967 (आवास) एवं मो. 07500241450 से प्राप्त की जा सकती है।

निदेशक की कलम से



विश्व की बढ़ती जनसंख्या एवं औद्योगिकरण के कारण कृषि योग्य भूमि का आकार निरन्तर घटता जा रहा है। अतः भोजन आपूर्ति हेतु खाद्य उत्पादों के अधिक से अधिक उत्पादन के लिए खेतों में कीटनाशी, फफूंदनाशी, खरपतवारनाशी, चूहेमार दवाएं व रासायनिक उर्वरकों आदि का प्रयोग दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। चूंकि ये रसायन जहरीले होते हैं तथा जिस प्रकार ये फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले जीवों के लिए घातक हैं उसी प्रकार असावधानीपूर्वक खेतों में किए गए इनके प्रयोग से खाद्य पदार्थ प्रदूषित हो जाते हैं, जिसका दुष्प्रभाव मानव, जीव-जन्तुओं, पशु-पक्षियों पर पड़ता है व प्रकृति में जैविक व अजैविक पदार्थों के बीच आदान-प्रदान का चक्र (इकोलॉजी सिस्टम) भी प्रभावित होता है। यह परिवर्तन वातावरण व मानव स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक है। इन सभी समस्याओं से निपटने हेतु हमें ऐसे विकल्प खोजने होंगे, जिनके दूरगामी प्रभाव मानव व सभी जीव जन्तुओं के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक न हों व वातावरण के लिए सुरक्षित हों। इस दिशा में 'जैविक खेती' एक महत्वपूर्ण विकल्प है। 'जैविक खेती उत्पादन' एक स्थाई, विश्वसनीय, प्रदूषण रहित, स्वास्थ्य हेतु लाभकारी एवं रसायन अवशेष रहित खाद्य उत्पादन की एक लाभकारी तकनीक है। इसके द्वारा गुणवत्तायुक्त खाद्य उत्पादन के लिए स्थानीय जलवायु के अनुकूल विकसित उत्पादन तकनीकों, जैविक खाद, जैविक कीटनाशक उत्पादन तकनीकों व जैव नियंत्रण की विभिन्न विधियों आदि के सफल प्रबन्धन की जानकारी आवश्यक है। जैविक खेती हेतु रासायनिक खादों, जहरीले कीटनाशकों के उपयोग के स्थान पर जैविक खादों एवं दवाइयों के प्रयोग को बढ़ावा देकर अधिक से अधिक उत्पादन प्राप्त करने की तकनीकों की जानकारी कृषकों तक पहुंचाना जरूरी है। इससे जल, मृदा व वातावरण शुद्ध रहेगा व प्रत्येक मनुष्य एवं जीवधारी भी स्वस्थ रहेंगे। भारत सरकार द्वारा 'जैविक खेती' को अपनाने के लिए निरन्तर प्रयास किए जा रहे हैं। 'जैविक खेती' के लाभों से लोगों को अवगत कराने हेतु कृषि विभाग द्वारा देश के विभिन्न स्थानों पर 'जैविक कृषि मेले व फूड फेस्टिवल' का भी आयोजन किया जाता है। इसमें प्रदेशभर के किसान कृषि की आधुनिक तकनीकों से जैविक खेती की विधि के बारे में ज्ञान प्राप्त करते हैं व स्थानीय, देशी व विदेशी पर्यटकों द्वारा जैविक उत्पादों की अच्छी खरीद से जैविक खेती करने वाले किसानों को अपनी फसल का उत्तम लाभ मिलता है।

भारत में 60 प्रतिशत कृषि क्षेत्र ऐसा है जहाँ जलवायु की अनुकूलता के कारण जहरीले कीटनाशकों व रासायनिक खादों की बहुत ही कम मात्रा या इनके बिना भी खेती की जा सकती है, जिसमें उत्तराखण्ड के पर्वतीय जनपदों का प्रमुख स्थान है। इस प्रकार भारत के अन्य राज्यों की भांति उत्तराखण्ड में भी 'जैविक खेती' को आधुनिक वैज्ञानिक तरीकों से बढ़ाने का व्यापक प्रचार व प्रयास निःसन्देह ही कृषि जगत में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन ला सकता है, जिससे कि ग्रामीणों व स्थानीय लोगों को उत्तम रोजगार के साधन उपलब्ध कराने के साथ पहाड़ों से तेजी से हो रहे पलायन को भी रोका जा सकता है। कृषि बागवानी विशेषज्ञों के अनुसार 'जैविक खेती' से प्रथम दो-तीन साल तक फसल उत्पादन पर असर पड़ता है, लेकिन उसके बाद उचित वैज्ञानिक तरीकों से उपयोग की गई जैविक खादों, दवाइयों के प्रयोग से उत्पादकता बढ़ाई जा सकती है।

सभी प्रसार वैज्ञानिकों से यह अपेक्षा है कि वह 'जैविक खेती' की आधुनिक तकनीकों व अनुसंधानों के व्यापक प्रचार-प्रसार द्वारा सुरक्षित पर्यावरण व उत्तम मानव स्वास्थ्य के साथ प्रदेश के कृषि विकास एवं कृषकों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करने में अपना बहुमूल्य योगदान देंगे।

Unesco

(वाई0पी0एस0 डबास)

सम्पर्क सूत्र :- डा0 वाई0पी0एस0 डबास, निदेशक प्रसार शिक्षा, गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय

पन्तनगर-263 145, रुधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड), ☎ 05944-233336 (कार्यालय), 233664 (निवास), Email-dee_gbpuat@rediffmail.com

विश्वविद्यालय हेल्प लाइन दूरभाष सं0 05944-234810, किसान कॉल सेन्टर निःशुल्क दूरभाष सं0 1800-180-1551

दृश्य यात्रा



कृषि विज्ञान केंद्रों द्वारा आयोजित प्रशिक्षण, प्रदर्शन एवं भ्रमण कार्यक्रमों की झलकियाँ